



सोमवार, 4 दिसंबर 2017

हलचलें - साहित्य जगत की

1. मैथिलि ग्रंथ का विमोचन

मैथिलि और हिंदी के लेखक रविंद्र नाथदास मिश्र की पुस्तक 'भोर - वा संझ - पोर' का लौकिक समारोह प्रयागी भवन, नई दिल्ली में हुआ जिसमें कुलदीप सहाय, अमर तारा, डॉ. रामसिंहका वर्मा, निवेदिता झा, डॉ. रविंद्र झा खन्ना डा. वैजनाथ कुमार मिश्र, दिवंगत विद्यालया कुमर प्रदि साहित्यकारों ने कृति और कृतिकार के वैशिष्ट्य की चर्चा की। संबोधन कवि अंशु मेहता ने किया।

2. जगदीश चंद्र माधुर जन्म शताब्दी समारोह

स्वातंत्र्योत्तर भारत में हिंदी के पहले बड़े नाटककार जगदीश चंद्र माधुर की जन्म शताब्दी पर साहित्य अकादमी के सहयोग से अमिता संस्था द्वारा 18 नवंबर को हिंदू कॉलेज दिल्ली में आयोजित कमेडी में बीजा चक्रवर्त्य देने हुए साहित्यकार डॉ. नरेन्द्र मोहन ने कहा कि वे बड़े लेखक ही नहीं पहले रचनागी में दिल्लीने महत्वपूर्ण नाटक लिखे। उन्होंने माधुर के प्रसिद्ध नाटक 'कोमल' की रचना में किराणा की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि उनका योगदान अविस्मरणीय है। समारोह में उपप्रधान निन्हा, प्रताप सहजान, शरद पंत आदि के साथ ललित माधुर ने भी माधुर के कृतियों पर प्रशंसा जताया और उनसे जुड़ी घाटों को रटता दिखाया।

3. साहित्यिक विद्याओं की घमांकेदार वापसी

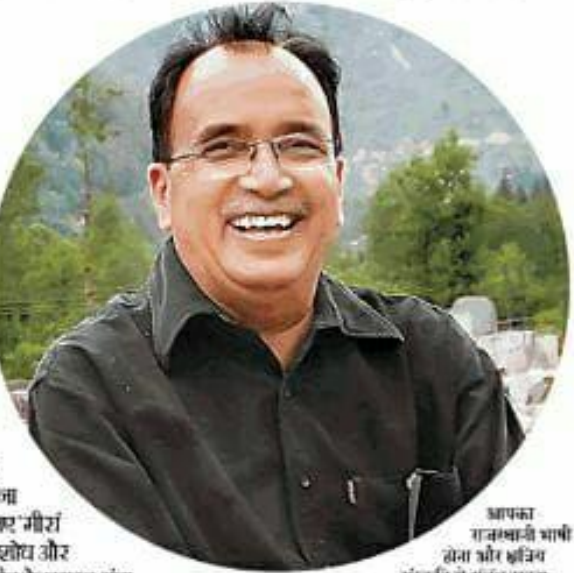
लम्बत है हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में साहित्य और उनकी विभिन्न किताबों की वापसी और चार तरीकों से हो रही है। मसाला खादी हिंदी विश्वविद्यालय की पत्रिका 'बहुवचन' का संस्करण विरोधक और 17 वर्षों की अनुपस्थिति के बाद 'इंडिया टुडे' की साहित्य वर्गों की या प्रकाशन विपिका रूप से इस बात का सूचक है कि संसार वापसी में हिंदी में साहित्य का घेरनावा हो रहा है। 'बहुवचन' के पहले संस्करण 'स्मरण में जीवन' विशेषता में लक्ष्मण अग्नी वैदिकों के महात्मापुत्र साहित्यकारों से जुड़े संस्करण है जिसे जाने-अनजाने लेखकों ने मनोरोग में लिखा है। हिंदी में इन जोड़ित की किताबों के विद्याओं की दुर्घटना से यह एक सारांशपूर्ण प्रकाश है। इसी तरह इंडिया टुडे की साहित्य वर्गों में इसकी कठोरता सामग्री है। खास तौर से एकदम नई पीढ़ी की रचनात्मकता की इनमें महत्व दिया गया है।

संवादकार
रोहित कुमार



सांचे-खांचे के बिना देखें मीरां

माधव सांचे ने अपनी प्रारंभिक पहचान कविता के आलोचक के रूप में बनाई थी। 'तभी हुई रस्खी पर' तथा 'कविता पर पूरा दूरस्थ' जैसी अपनी आलोचना पुस्तकों में इस पहचान को छुट्ट दिखाया था। बाद में वे मीरां की कविता वरी समझने के क्रम में मीरां के जीवन और समाज पर गहरे शोध में संलग्न हुए और कई वर्षों के अध्ययन-उत्खनन और परिश्रम की बाद आई उनकी पुस्तक 'पारंगना चौख पवन सरसी री' की हिंदी समाज में मूलांतक से सराहना की। अभी उन्होंने साहित्य अकादमी के दिग्दर्शक मीरां रचना संघनन भी तैयार किया है। उनके शोध और मीरां के जीवन पर रोहित कुमार से बातचीत के प्रमुख अंश...



आपका साक्षात्कारी भाषी रोना और क्षुब्ध संस्कृति से संबंध रखना ऐसे काम में किनासा सहायक हुआ ?

आपने अपने जर्नल में विषयनाथ त्रिपाठी, आनंदप्रसाद खन्ना और पारिता मुन्ना के महात्मापुत्र समझे जाने वाले कार्य को धारित किया। क्या उनका काम कोई शिक्षा देने वाला नहीं था ?

कहा है कि मैंने मीरां की कविता साहित्य करने के बाद, इसके आगे और अलग जाने-बढ़ने की थी। इन कामों का भी अलग महत्व है। विषयनाथ त्रिपाठी की निष्ठा बहुत पहले आई थी और उस समय मीरां से संबंधित कभी-कभी-कभी उल्लास नहीं था; अलगप्रसाद खन्ना की किताब मीरां को उनके साहित्य चिंतन में स्पष्टता का प्रकाश तो है, लेकिन इसमें हलचल और अलंकारों का बहुत और प्रयोग भी निर्बंध लोक-सृष्टियों का है लेकिन उनके साथ गहरी खाई है कि यह किंवदंती उन लोक-सृष्टियों का चरम नसतों है, जो उनके लक्ष्य विषयों के अनुकूल पड़ते हैं।

मीरां पर दर्जनों किताबें लिखी गई हैं। शोध हुए और उपन्यास फिल्में भी। आपने किस विषयवास से मीरां पर काम शुरू किया कि कुछ तथा और प्रामाणिक कर सकेंगे ?

काम से शोध पर बहुत थे, पर लक्ष्य था जैसे-जैसे मीरां है वह आगे-आगे वाक्यें लट्टी है। मीरां की कविता को संदर्भित कर लेक ने अपने कुछ-कुछ और भावनाओं को साहित्यिक के माध्यम को उभारना, इसीलिए यह धीरे-धीरे ऐसा हो गई कि मीरां को जाने-अनजाने जगह और पुनर्जागरण करने लगे और इसी कारण-कारणों में बाद-बादत आगे-आगे मीरां शोध का किंवदंती शुरू हो गया। धार्मिक आस्था-व्यवस्था केवल उनकी कविता पर उभार था, जबकि उपनिवेशवादीय प्रभावधर्मों ने उनके जीवन को अपने विश्वास में रखा, वेगल और लक्ष्य का अन्वेषण बना दिया। (व्यापारियों ने केवल उनकी कविता से जग-जग और निरंतर को देखा, जो सभी निष्कर्षों ने अपने को केवल उनके साक्षात् और स्पष्टकार तक सीमित बना दिया। इस उदा-पटक और अपने-अपने मीरां शोध को कयास में मीरां का यह भी अनुभव और शोध अनदेखा कर रहा जो उनकी कविता में बहुत मुखर है और जिसके अंतर्गत अपने संकीर्ण आसक्तियों, लोक-सृष्टियों और इतिहास में भी मौजूद है।) पारंगना चौख पवन सरसी री में मीरां के कवि निर्माण को प्रेरित करने के समझने के साथ-साथ मीरां में अलग-अलग कवि अनुभव और शोध के संकेतों को खोजने और विश्वास पर प्रकाश है। यह प्रकाश नहीं है कि वह अज्ञान और पूर्ण अज्ञान है। यह मुझका है और उसे भी देखो कि इन संकेतों का कोई क्या संदर्भ सामने आए।

विश्लेषण और उपरान्त में अब भी मीरां की कोई चर्चा नहीं है ?

वहाँ के लोक-संघन में मीरां की स्मृतिगत चर्चाओं से है। मीरां के पठन साक्षात् साक्षात् सीधे तौर पर-पारंगना में प्रवेशित है। उनकी स्मृति अनुकूलियों के रूप में वे हैं। लोक के साक्षात् में मीरां के बाद-बाद और मीरां के हैं। समाज ने उनको भी समझ दिया। कुछ लोग बाद के पारंगना-इतिहास रूप में मीरां के नहीं देखे को खोजना उभार जाकी समझ अन्वेषण की तरह लेते हैं लेकिन इसका महत्व दुर्भाग्य है। उपन्यास के संदर्भों की निष्कर्षों को भी साक्षात् में उभारने की परंपरा थी। साक्षात् विद्याओं के अपने धार्मिक-इतिहासकार थे, जिसमें पारंगना का एक जगह था। पारंगना चिंतन और उनकी कविताओं का पुनर्निर्माण थे और अपने आलोचना के दिग्दर्शकों पर निर्भर थे।

धार्मिक ढंग। यह सामान्य लोक-जीवन और संस्कृति से बहुत अलग नहीं है। साक्षात् फल-परिणाम का जीवन और उनके संस्कृतिक मूल्य बहुत अलग नहीं हैं। यह अलग बात है कि उनके अलग होने की बहुत प्रचलित की गई है।

आपने यह तथ्य निखलकर बताया कि मीरां जीवन के अंत तक स्वाभिमान और सामान में जीवन यापन कर रही थीं और मेधावत कायमता ने उन्हें बड़े जातीयता का दर्जा दे दिया था। क्या यह बात सही है नहीं कि इन लेखकों के बीच खातों की जांच करें ?

यह तथ्य असाध्युक्त होने करने का प्रयोजन है। जड़-बमर्षियों और साहित्यकारों ने अपने खतराओं के सामने मीरां के टूट-टूट और असाध्य होने की बात प्रचलित कर रखी है। उनके अनुभव आर्थिक-सांस्कृतिक से किसी को के पारंगना होने का एकमात्र तथ्य है। तथ्य कहते हैं कि सामाजिक सुरक्षा के पारंगना-उपकरणों के उभार में मीरां को आर्थिक-सांस्कृतिक से सुरक्षा था। मीरां ही नहीं, मीरां की सभी साक्षात्-मैथिली के सांस्कृतिक पारंगना-उपकरणों ने। इनमें लक्ष्य को कम लेना था। मीरां के जीवन के बाद आपने साहित्य अकादमी के लिए उनके फल पर प्रामाणिक संघनन भी तैयार किया। यह प्रामाणिक क्या है ? क्या भक्ति साहित्य के विद्या पर प्रामाणिक चतुर्वेदी के किताब के पर प्रामाणिक नहीं ?

साहित्य अकादमी से प्रवेशित संघनन में मीरां की रचनाओं के चरम के लिए प्रामाणिकता को पारंगना-कविता के अलग-अलग रखी नहीं है। साहित्य को औपनिवेशिक साक्षात् और संसार का ही जीवन है कि उन्हें अपने प्राचीन साहित्य से मुक्त, प्राचीन और आधुनिक होने का प्रयास चाहिए। बिना इसके इन प्रकारके असाध्य-कथक साहित्य करने में ही नहीं करते। मीरां की रचनाओं को भी आधुनिक कथक साहित्य या लक्ष्य-कथा है। समाज साहित्य अलग तरह का है-वास्तविकता और उभार हुआ नहीं है। यह साहित्यीक लोक-सृष्टियों के स्मृति में जाग और स्मृति से किन-किसी-किसी होता है। इस तरह समाज आर्थिकता प्राचीन साहित्य-कथक लोक को स्मृति पर निर्भर है। परामुखा-चतुर्वेदी की मीरां परकई अन्य पदचालियों की उपन्यास के अन्वेषण में बहुत लोक-सृष्टियों में ही साहित्य के अन्वेषण-प्रयोग में लेकिन इस पदचाली के वे खुद अन्वेषण नहीं थे। उनको पदचाली ललितप्रसाद कुमर द्वारा 'मीरां स्मृति शोध' में प्रवेशित 1585 है, की प्रति के 69 और 174 है। की प्रति के 103 पृष्ठ पर आधारित थी। एक तो वे प्रवेशित अन्य उपन्यास नहीं है और दूसरे, इनमें क्या बहुत अन्वेषण है। इस अन्वेषण पर इन पदों को सामाजिक के कुछ विद्युतों ने जगती और आधुनिक-उभार दिया।